



Miss Nikita bhardwaj

08 Nov 2001

03:05 AM

Jaipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121912301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 7-08/11/2001
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 03:05:00 घंटे
इष्ट _____: 51:00:46 घटी
स्थान _____: Jaipur
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:53:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 02:38:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:21 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:46:56 घंटे
सूर्योदय _____: 06:40:41 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:39:55 घंटे
दिनमान _____: 10:59:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 21:39:52 तुला
लग्न के अंश _____: 03:12:03 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: शुभ
करण _____: बव
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डा-डालचंद
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	कार्तिक	17
पंजाबी	संवत : 2058	कार्तिक	23
बंगाली	सन् : 1408	कार्तिक	22
तमिल	संवत : 2058	आइपसी	23
केरल	कोल्लम : 1177	तुलम	23
नेपाली	संवत : 2058	कार्तिक	23
चैत्रादि	संवत : 2058	कार्तिक	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2058	आश्विन	कृष्ण 7

पंचांग

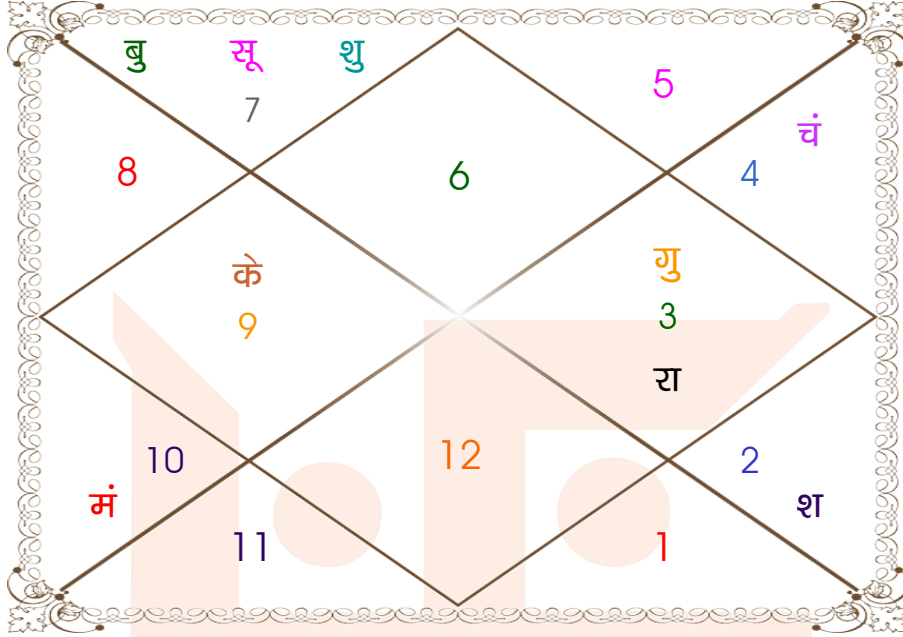
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:26:34
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 09:13:20 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 07:44:03 घंटे
जन्म योग _____ : शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 08:26:34 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 44:39:12
भभोग _____ : 57:33:53
भोग्य दशा काल _____ : शनि 4 वर्ष 3 मा 12 दि

घात चक्र

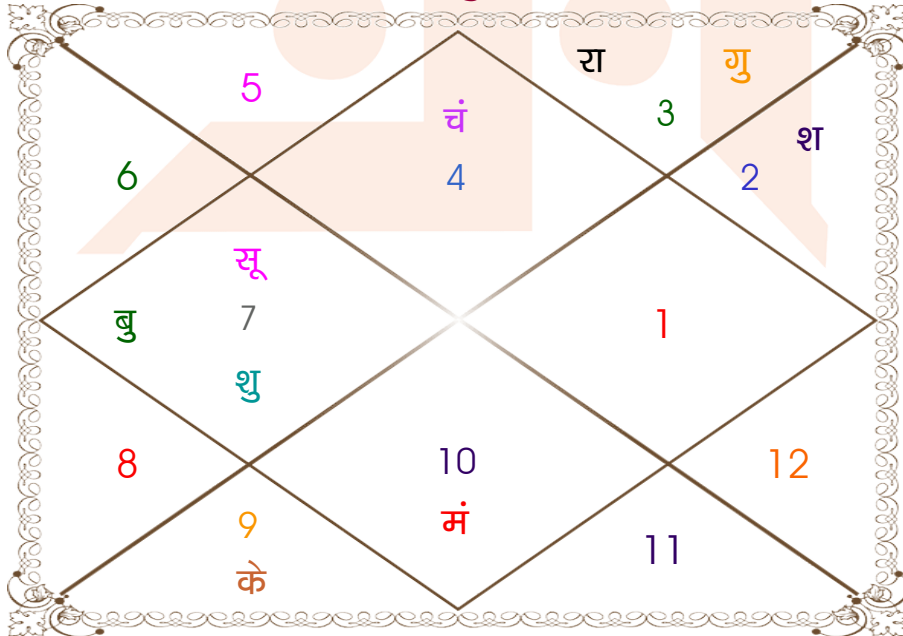
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		श	गु रा
			चं
मं			
के		शु सू बु	ल

लग्न कुण्डली

श		
रा गु		
	चं	मं
		के
ल	बु सू शु	

विंशोत्तरी
शनि 4वर्ष 3मा 12दि
शनि

08/11/2001

21/02/2107

शनि	19/02/2006
बुध	20/02/2023
केतु	19/02/2030
शुक्र	19/02/2050
सूर्य	20/02/2056
चन्द्र	19/02/2066
मंगल	19/02/2073
राहु	20/02/2091
गुरु	21/02/2107

योगिनी

धान्या 0वर्ष 8मा 3दि
संकटा

12/07/2024

12/07/2032

संकटा	23/04/2026
मंगला	13/07/2026
पिंगला	22/12/2026
धान्या	23/08/2027
भामरी	12/07/2028
भद्रिका	22/08/2029
उल्का	22/12/2030
सिद्धा	12/07/2032

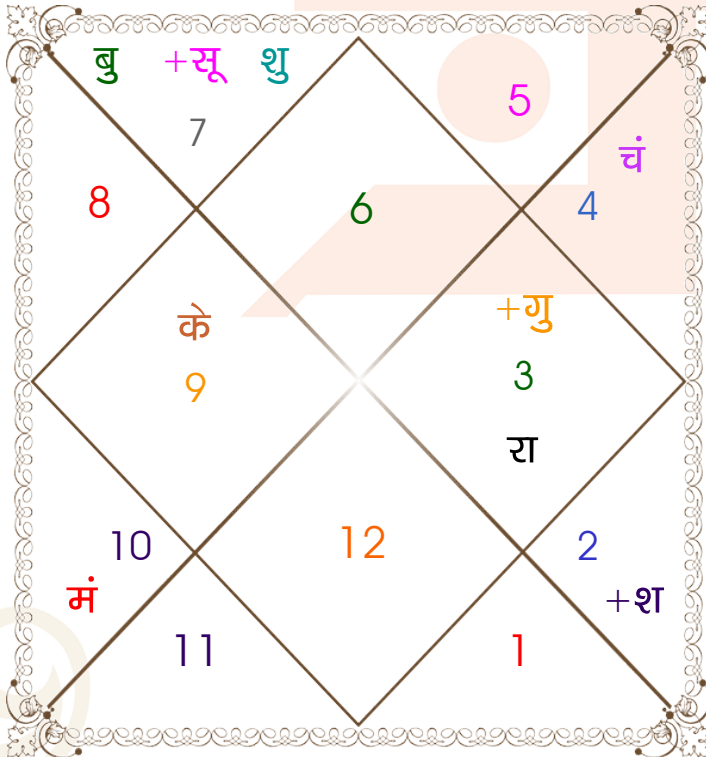
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	03:12:03	322:29:31	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	शनि	---
सूर्य			तुला	21:39:52	01:00:14	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	नीच राशि
चंद्र			कर्क	13:39:37	13:56:59	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	स्वराशि
मंगल			मक	13:52:07	00:42:05	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	उच्च राशि
बुध			तुला	06:13:50	01:31:27	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	मित्र राशि
गुरु	व		मिथु	21:46:05	00:01:03	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	05:17:38	01:15:05	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	मूलत्रिकोण
शनि	व		वृष	19:34:54	00:04:02	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	मित्र राशि
राहु			मिथु	04:04:32	00:00:59	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	शुक्र	उच्च राशि
केतु			धनु	04:04:32	00:00:59	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	उच्च राशि
हर्ष			मक	27:03:31	00:00:24	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
नेप			मक	12:14:12	00:00:42	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	20:08:05	00:02:05	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
दशम भाव			मिथु	03:07:19	--	मृगशिरा	--	5	बुध	मंगल	शुक्र	--

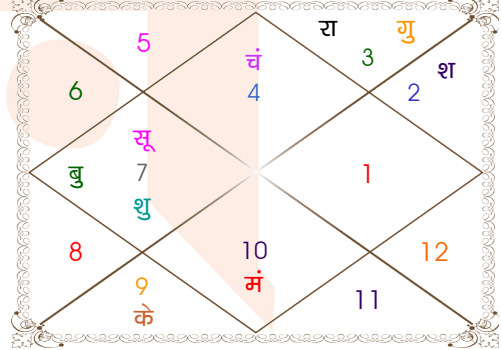
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:52:40

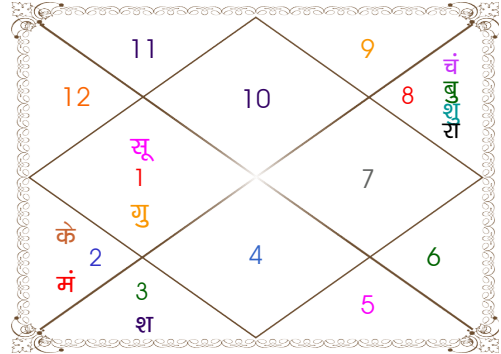
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 18:11:16	कन्या 03:12:03
2	कन्या 18:11:16	तुला 03:10:29
3	तुला 18:09:41	वृश्चिक 03:08:54
4	वृश्चिक 18:08:07	धनु 03:07:19
5	धनु 18:08:07	मकर 03:08:54
6	मकर 18:09:41	कुम्भ 03:10:29
7	कुम्भ 18:11:16	मीन 03:12:03
8	मीन 18:11:16	मेष 03:10:29
9	मेष 18:09:41	वृष 03:08:54
10	वृष 18:08:07	मिथुन 03:07:19
11	मिथुन 18:08:07	कर्क 03:08:54
12	कर्क 18:09:41	सिंह 03:10:29

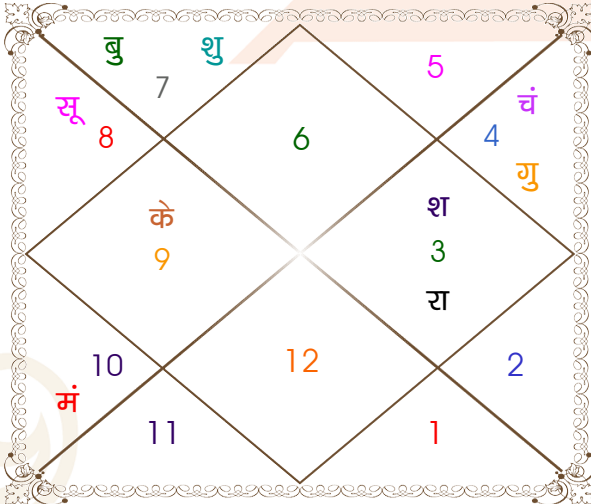
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	03:12:03
2	तुला	01:21:57
3	वृश्चिक	01:47:57
4	धनु	03:07:19
5	मकर	04:23:25
6	कुम्भ	04:48:23
7	मीन	03:12:03
8	मेष	01:21:57
9	वृष	01:47:57
10	मिथुन	03:07:19
11	कर्क	04:23:25
12	सिंह	04:48:23

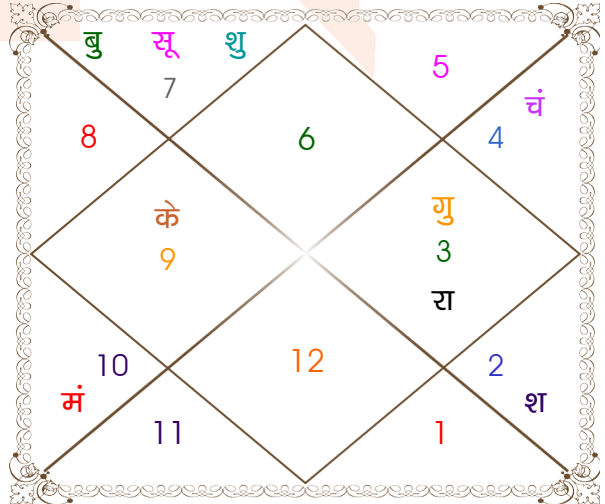
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 3 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
08/11/2001	19/02/2006	20/02/2023	19/02/2030	19/02/2050
19/02/2006	20/02/2023	19/02/2030	19/02/2050	20/02/2056
00/00/0000	बुध 18/07/2008	केतु 19/07/2023	शुक्र 21/06/2033	सूर्य 09/06/2050
00/00/0000	केतु 15/07/2009	शुक्र 17/09/2024	सूर्य 21/06/2034	चंद्र 09/12/2050
00/00/0000	शुक्र 15/05/2012	सूर्य 23/01/2025	चंद्र 20/02/2036	मंगल 15/04/2051
00/00/0000	सूर्य 22/03/2013	चंद्र 24/08/2025	मंगल 21/04/2037	राहु 09/03/2052
00/00/0000	चंद्र 21/08/2014	मंगल 20/01/2026	राहु 21/04/2040	गुरु 26/12/2052
00/00/0000	मंगल 18/08/2015	राहु 07/02/2027	गुरु 21/12/2042	शनि 08/12/2053
08/11/2001	राहु 07/03/2018	गुरु 14/01/2028	शनि 19/02/2046	बुध 15/10/2054
राहु 09/08/2003	गुरु 12/06/2020	शनि 22/02/2029	बुध 20/12/2048	केतु 20/02/2055
गुरु 19/02/2006	शनि 20/02/2023	बुध 19/02/2030	केतु 19/02/2050	शुक्र 20/02/2056

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
20/02/2056	19/02/2066	19/02/2073	20/02/2091	21/02/2107
19/02/2066	19/02/2073	20/02/2091	21/02/2107	00/00/0000
चंद्र 20/12/2056	मंगल 19/07/2066	राहु 02/11/2075	गुरु 09/04/2093	शनि 23/02/2110
मंगल 21/07/2057	राहु 06/08/2067	गुरु 28/03/2078	शनि 21/10/2095	बुध 03/11/2112
राहु 20/01/2059	गुरु 12/07/2068	शनि 01/02/2081	बुध 26/01/2098	केतु 12/12/2113
गुरु 21/05/2060	शनि 21/08/2069	बुध 21/08/2083	केतु 02/01/2099	शुक्र 11/02/2117
शनि 21/12/2061	बुध 18/08/2070	केतु 08/09/2084	शुक्र 03/09/2101	सूर्य 24/01/2118
बुध 22/05/2063	केतु 14/01/2071	शुक्र 09/09/2087	सूर्य 22/06/2102	चंद्र 25/08/2119
केतु 21/12/2063	शुक्र 15/03/2072	सूर्य 02/08/2088	चंद्र 22/10/2103	मंगल 03/10/2120
शुक्र 21/08/2065	सूर्य 21/07/2072	चंद्र 01/02/2090	मंगल 27/09/2104	राहु 09/11/2121
सूर्य 19/02/2066	चंद्र 19/02/2073	मंगल 20/02/2091	राहु 21/02/2107	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 4 वर्ष 3 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु 20/01/2026 07/02/2027	केतु - गुरु 07/02/2027 14/01/2028	केतु - शनि 14/01/2028 22/02/2029	केतु - बुध 22/02/2029 19/02/2030	शुक्र - शुक्र 19/02/2030 21/06/2033
राहु 18/03/2026 गुरु 09/05/2026 शनि 08/07/2026 बुध 01/09/2026 केतु 23/09/2026 शुक्र 26/11/2026 सूर्य 15/12/2026 चंद्र 16/01/2027 मंगल 07/02/2027	गुरु 25/03/2027 शनि 18/05/2027 बुध 05/07/2027 केतु 25/07/2027 शुक्र 20/09/2027 सूर्य 07/10/2027 चंद्र 04/11/2027 मंगल 24/11/2027 राहु 14/01/2028	शनि 18/03/2028 बुध 15/05/2028 केतु 07/06/2028 शुक्र 14/08/2028 सूर्य 03/09/2028 चंद्र 07/10/2028 मंगल 30/10/2028 राहु 30/12/2028 गुरु 22/02/2029	बुध 14/04/2029 केतु 06/05/2029 शुक्र 05/07/2029 सूर्य 23/07/2029 चंद्र 22/08/2029 मंगल 12/09/2029 राहु 06/11/2029 गुरु 24/12/2029 शनि 19/02/2030	शुक्र 10/09/2030 सूर्य 10/11/2030 चंद्र 20/02/2031 मंगल 02/05/2031 राहु 31/10/2031 गुरु 11/04/2032 शनि 20/10/2032 बुध 11/04/2033 केतु 21/06/2033
शुक्र - सूर्य 21/06/2033 21/06/2034	शुक्र - चंद्र 21/06/2034 20/02/2036	शुक्र - मंगल 20/02/2036 21/04/2037	शुक्र - राहु 21/04/2037 21/04/2040	शुक्र - गुरु 21/04/2040 21/12/2042
सूर्य 09/07/2033 चंद्र 09/08/2033 मंगल 30/08/2033 राहु 24/10/2033 गुरु 11/12/2033 शनि 07/02/2034 बुध 31/03/2034 केतु 21/04/2034 शुक्र 21/06/2034	चंद्र 11/08/2034 मंगल 15/09/2034 राहु 16/12/2034 गुरु 07/03/2035 शनि 11/06/2035 बुध 05/09/2035 केतु 11/10/2035 शुक्र 20/01/2036 सूर्य 20/02/2036	मंगल 16/03/2036 राहु 19/05/2036 गुरु 14/07/2036 शनि 20/09/2036 बुध 19/11/2036 केतु 14/12/2036 शुक्र 23/02/2037 सूर्य 16/03/2037 चंद्र 21/04/2037	राहु 02/10/2037 गुरु 25/02/2038 शनि 18/08/2038 बुध 20/01/2039 केतु 25/03/2039 शुक्र 24/09/2039 सूर्य 18/11/2039 चंद्र 17/02/2040 मंगल 21/04/2040	गुरु 29/08/2040 शनि 30/01/2041 बुध 17/06/2041 केतु 13/08/2041 शुक्र 22/01/2042 सूर्य 12/03/2042 चंद्र 01/06/2042 मंगल 28/07/2042 राहु 21/12/2042
शुक्र - शनि 21/12/2042 19/02/2046	शुक्र - बुध 19/02/2046 20/12/2048	शुक्र - केतु 20/12/2048 19/02/2050	सूर्य - सूर्य 19/02/2050 09/06/2050	सूर्य - चंद्र 09/06/2050 09/12/2050
शनि 22/06/2043 बुध 03/12/2043 केतु 08/02/2044 शुक्र 19/08/2044 सूर्य 16/10/2044 चंद्र 20/01/2045 मंगल 29/03/2045 राहु 18/09/2045 गुरु 19/02/2046	बुध 16/07/2046 केतु 14/09/2046 शुक्र 06/03/2047 सूर्य 27/04/2047 चंद्र 22/07/2047 मंगल 20/09/2047 राहु 22/02/2048 गुरु 09/07/2048 शनि 20/12/2048	केतु 14/01/2049 शुक्र 26/03/2049 सूर्य 16/04/2049 चंद्र 22/05/2049 मंगल 16/06/2049 राहु 19/08/2049 गुरु 15/10/2049 शनि 21/12/2049 बुध 19/02/2050	सूर्य 25/02/2050 चंद्र 06/03/2050 मंगल 12/03/2050 राहु 29/03/2050 गुरु 12/04/2050 शनि 30/04/2050 बुध 15/05/2050 केतु 22/05/2050 शुक्र 09/06/2050	चंद्र 24/06/2050 मंगल 05/07/2050 राहु 01/08/2050 गुरु 26/08/2050 शनि 23/09/2050 बुध 19/10/2050 केतु 30/10/2050 शुक्र 29/11/2050 सूर्य 09/12/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

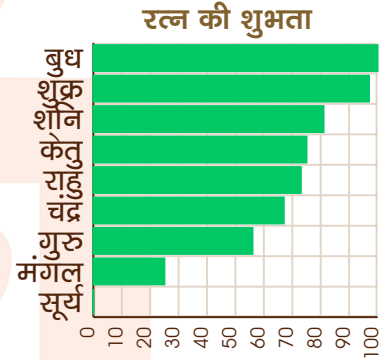
मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	97%	धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	81%	भाग्योदय, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	75%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	73%	व्यावसायिक उन्नति, धन
मोती	चंद्र	67%	धनार्जन
पुखराज	गुरु	56%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
मूंगा	मंगल	25%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	19/02/2006	0%	54%	0%	100%	56%	100%	94%	80%	62%
बुध	20/02/2023	12%	54%	25%	100%	56%	100%	81%	73%	75%
केतु	19/02/2030	0%	54%	38%	100%	56%	100%	69%	61%	88%
शुक्र	19/02/2050	0%	54%	25%	100%	56%	100%	88%	80%	81%
सूर्य	20/02/2056	25%	73%	38%	100%	62%	85%	69%	61%	62%
चंद्र	19/02/2066	12%	79%	25%	100%	56%	97%	81%	61%	62%
मंगल	19/02/2073	12%	73%	50%	94%	62%	97%	81%	61%	81%
राहु	20/02/2091	0%	54%	0%	100%	56%	100%	88%	86%	62%
गुरु	21/02/2107	12%	73%	38%	94%	69%	85%	81%	73%	75%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसाय
अल्प बचत
व्यय
धन
शत्रु व रोग मुक्ति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में थोड़ी उग्रता अवश्य हो सकती है। मंगल के शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखेश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है परन्तु विवाह में कोई विशेष बाधाएं या समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। शान्ति पूर्वक आप का विवाह कार्य सम्पन्न होगा। आप दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विवाह के पश्चात दाम्पत्य जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परस्पर भी सामान्यतया मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे।

आपकी चन्द्र कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः इसके प्रभाव से आप सुयोग्य जीवन साथी प्राप्त करने में सफल रहेंगे। परस्पर अत्यंत ही प्रेम एवं सहयोग का भाव रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण रूप से शांत तथा सुखी रहेगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप किसी उच्च पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में सर्वदा यथोचित उन्नति होती रहेगी। प्रथम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आप पारिवारिक सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे सामान्यतया शान्ति पूर्वक परिवार का पालन करेंगे। विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी आप समर्थ होंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण शान्ति तथा सुख से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी चन्द्रकुंडली में मंगल का दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। एक सौभाग्यशाली पुरुष होकर जीवन में धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा। सभी भौतिक सुखों का आप आनंद पूर्वक उपभोग करेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या की चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में ही मंगल हो उस कन्या से यदि आवश्यक हो तभी विवाह करना चाहिए अन्यथा यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए। क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए विशेष शुभ नहीं होता तथा दाम्पत्य जीवन में शारीरिक तथा अन्य प्रकार से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में यदि मंगल स्थित हो तो वह शुभ फल प्रदान करेगा तथा दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न नहीं होंगी अतः अच्छी तरह सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भविष्य में किसी भी प्रकार से परेशानी या असुविधा उत्पन्न न हो।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संधी, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(20/02/2023 - 19/02/2030)

केतु की महादशा 20/02/2023 को आरम्भ और 19/02/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपकी यात्रा, व्यय, अवांछित परिवर्तन, और सगे संबंधियों की सहायता मिली होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको ख्याति, प्रगति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप आशावादी होंगे और स्वयं को स्फूर्तिवान तथा सक्रिय महसूस करेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, छाती से संबंधित बीमारी, मूत्राशय की समस्या, वृक्कशोथ की बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको माता पिता से लाभ हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार में अच्छी आय होगी, विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे। जीविका के लिये विधि, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सम्पर्क-कार्य, प्रबन्धन, ग्राफिक कला, ललित कला, विमान-विज्ञान, शिक्षण, परिष्कृत कला आदि का चयन कर सकते हैं। वस्त्र, चमड़े, रबड़, प्लास्टिक, मवेशी, अनाज, फल, सोने, चाँदी, कलाकृतियों आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, सम्मान और लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा मनोकामना पूरी होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, कार्य-व्यवसाय से सम्बन्धित यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी। यह दशा आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के मामले तूल पकड़ेंगे और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी-बड़ी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप विद्यालय बदल सकते हैं। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर विज्ञान, परिष्कृत कला, विधि, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, होटल प्रबंधन आदि में आपकी रुचि होगी। आप संतुलित और समझदार हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्ग दर्शन की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को यश और ख्याति प्राप्त होगी और जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। आपके पड़ोसी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को यश और ख्याति की प्राप्ति और उन्नति होगी। आपका उनके साथ कुछ मतान्तर हो सकता है। आपके पिता के जीवन में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को लाभ मिलेगा और उन्नति होगी जबकि बड़ों को विरोधियों पर विजय, ननिहाल से सहायता और प्रतिस्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको गृह-सुख, उत्तम शिक्षा, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम और सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(24/08/2025 - 20/01/2026)**

आपके लिए केतु की महादशा 20/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 24/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। दिल खोल कर पैसा खर्च कर सकते हैं। सफलता में बाधा आ सकती है। पुराना ढांचा बदलेगा, नयापन आएगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। कार्यक्षमता उत्तम होगी। विरासत से या जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता की आय उत्तम होगी, घरेलू सुख अच्छा होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए खेलकूद में रुचि, साहित्य से लगाव और संभवतः विवाह का संकेत है। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी या व्यापार से लाभ होगा, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान सफल होगी, स्पर्धियों पर विजय होगी, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, निवेश लाभप्रद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में मीठी रोटी बनाकर उसे दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - राहु
(20/01/2026 - 07/02/2027)**

आपके लिए केतु महादशा 20/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 20/01/2026 को प्रारंभ होकर 07/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध बनेंगे। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। विदेशियों से संपर्क या लेन-देन संभव है। शिक्षा उत्तम होगी; माता से मधुर संबंध रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। वाहनसुख की संभावना है। भूमि से आय में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता धन का संचय करेंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अचानक धनागम, विरासत से

लाभ, अधिक खर्च का संकेत है। आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र, सतनजा और उड़द की दाल का दान करें।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे और धनी बनेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार को शिवजी की उपासना भैरव रूप में करें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु (07/02/2027 - 14/01/2028)

आपके लिए केतु महादशा 20/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 07/02/2027 को प्रारंभ होकर 14/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा उत्तम होगी। सरकार से लाभ और सहायता प्राप्त होंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। सुख-साधन और वाहन उपलब्ध होंगे। माता से उत्तम संबंध होंगे। विविध माध्यमों से धनागम हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, माता पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता की आय उत्तम होगी, वह सुख-साधन संपन्न होंगे, परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली और धनी होंगे। परामर्शदाता प्रसिद्ध होंगे ; आय अच्छी होगी। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं जैसे वस्त्र, फूल, दाल, शहद आदि दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - शनि (14/01/2028 - 22/02/2029)

आपके लिए केतु महादशा 20/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 14/01/2028



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**महादशा :- शुक्र
(19/02/2030 - 19/02/2050)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 19/02/2030 को आरम्भ होकर 19/02/2050 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोड़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(19/02/2030 - 21/06/2033)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 19/02/2030 को प्रारंभ होकर 19/02/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 19/02/2030 को प्रारंभ होकर 21/06/2033 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

शुक्र शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व और सुंदरता में निखार आएगा। उत्तम भोजन के शौकीन होंगे। खान-पान में सावधानी और संयम आवश्यक हैं अन्यथा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। संयम बरतने पर धन और स्वास्थ्य की स्थिति अति उत्तम रहेगी। वाहन सुख रहेगा। घर में समृद्धि होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।